डॉ. अम्बेड़कर के प्राचीन बौद्ध धर्म ग्रंथ पर चिंतन और विचार

Kritika Pareek

Department of History
Gurugram, Haryana, India.

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 4, (July-August 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

बौद्ध धर्म एक महान् क्रान्ति थी । यह उतनी ही महान् क्रान्ति थी जितनी फ्रांस की क्रान्ति, यद्यपि यह धार्मिक क्रान्ति के रूप में प्रारम्भ हुई, तथापि यह धार्मिक क्रान्ति से बढ़कर थी । यह सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति बन गई । डॉ. अम्बेडकर के अनुसार प्रथम समाज सुधारकों में से सबसे महान गौतम बुद्ध थे । समाज सुधार का इतिहास ही बुद्ध से शुरू होता है, और कोई भी इतिहास उनकी उपलब्धियां बताए बिना अधूरा रहेगा ।

परिचय

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार सिद्धार्थ का जन्म शाक्य वंश में उत्तर भारत में नेपाल की सीमा के पास कपिल वस्तु नगर में ईसा पूर्व 563 में हुआ उनका मूल नाम गौतम था वह एक राजकुमार थे उनकी शिक्षा एक राजकुमार के रूप में हुई थी । उनका विवाह हुआ और उनके एक पुत्र भी था आर्यों के समाज में बुराईयों और दु:खों से पीड़ित लोगों को देखकर उन्होंने सच्चाई और यूक्ति की खोज के लिए 29 वर्ष की उम्र में सांसारिक जीवन त्याग दिया था । उन्होंने चिंतन-मनन किया तथा दो जाने-माने शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण की लेकिन उनकी शिक्षा से संतुष्ट न होने पर, वे शिक्षकों को छोड़कर श्रमण बन गए इसे भी व्यर्थ समझकर उन्होंने छोड़ दिया गहराई से सोचने पर उन्हें बोध हुआ । इस अंतर्ज्ञान के आधार पर उन्होंने अपना धम्म (धर्म) प्रतिपादित किया यह उन्होंने 33 वर्ष की अवस्था में किया।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध ने जब अपना अभियान शुरू किया और उनकी शिक्षा से जो महान् सुधार हुए उनको समझने से पहले तत्कालीन आर्य सभ्यता की विकृत स्थिति को जानना आवश्यक है ।

तत्कालीन आर्य समाज सबसे घृणित सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यभिचार से फसा हुआ था सामाजिक बुराईयों में आर्य लोग जुआ खेलना, शराब पीना आदि आदतों में फसा हुआ था । प्रत्येक राजा के यहां जुआ खेलने के लिए महल के साथ ही एक मंडल हुआ करता था हर एक राजा जुए के विशेषज्ञ को नौकरी में रखते थे । जो खेल से समय में राजा का सहायक हुआ करता था । जुआ राजाओं का केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं था वे बड़े दाव लगाकर खेलते थे ।

राजा राज्यों को, आश्रितों व रिश्तेदारों, गुलामों को दावों पर लगा देते थे । राजा नल ने पुष्कर के साथ खेलते हुए हर चीज दाव पर लगा कर हार गए । केवल स्वयं व अपनी पत्नी को दाव पर नही लगाया नल को जंगल में जाकर एक बिखारी के रूप में रहना पड़ा इसके बाद आर्यों में शराब पीने की सबसे बूरी आदत थी सबसे शर्मनाक बात तो यह की आर्य समाज में महिलाए भी शराब पीती थी । उदाहरण के लिए राजा विराट की पत्नी 'सुदेशना' यहां तक की ब्राह्मण महिलाएं भी शराब की आदत से बची हुई नदी थी आर्य माहिलाएं शराब पीती थी और नृत्य करती थी कौसीतकी गृह सुत्र से स्पष्ट है जिसमें कहा गया है कि चार या आठ सधवा महिलाएं शराब व भोजन का सेवन करके वैवाहिक समारोह से पहले रात में चार बार नाचेगी ।

महात्मा बुद्ध का आदर्श

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध ने यह अनुभव किया कि अच्छे और विशुद्ध जीवन का बोध कराने के लिए आदेश की अपेक्षा उदाहरण बेहतर है एक अच्छा और विशुद्ध जीवन बीताकर उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया । जिससे की वह सभी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत कर सके । उन्होंने कितना निष्कलक जीवनयापन किया इसका परिचय हमें 'ब्रह्म' जाल सुत्त से प्राप्त होता है, इससे हमें केवल यह ही जानकारी नहीं मिलती की बुद्ध ने कितना विशुद्ध जीवन यापन किया, अपितु यह हमें इस बारे में भी जानकारी देता है कि आर्यो के सर्वश्रेष्ठ समाज में ब्राह्मण कितना अस्वच्छ जीवन यापन करते थे ।

नैतिकता

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध प्राणियों की हत्या को अस्वीकार करते हुए गौतम जीवन के विनाश से अलग रहते है । उन्होंने गदा और तलवार अलग रख दी और कठोरता से लज्जित दया से परिपूर्ण सभी जीवनधारियों के प्रति संवेदनशील एवं दयालू रहते हैं । बुद्ध 'अशुचिता' का परित्याग करते हुए ब्रह्मचारी है । वह यौनाचार की अश्लील प्रथा से स्वयं को अलग और कोसो दूर रखते हैं । 'मिथ्याभाषण का भी परित्याग करते हुए गौतम अपने आप को झूठ से अलग रखते है । वह सत्य बोलते है और सत्य से कमी डिगते नहीं वह निष्ठावान और विश्वास योग्य है तथा विश्व को दिया गया वचन भंग नहीं करते ।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार गौतम निदांपूर्ण बातों को स्वीकार नहीं करते उनसे दूर रहते है । वह जो कछ सुनते है वह लोगों के बीच वाद-विवाद उत्पन्न करने के लिए उनको दोहराते नहीं । इसलिए वह बटे हुए लोगों को एकजूट करने के लिए जीवन यापन करते है । वह मित्रों को प्रोत्साहन देने वाले, शांति स्थापित करने वाले, शांति प्रेम, शांति के लिए भावपूर्ण और शान्ति वर्धक शब्दों के वक्ता है ।

अम्बेडकर के अनुसार गौतम अविनय पूर्ण वाणी का परित्याग करते हुए कठोर भाषा का प्रयोग नहीं करते वह ऐसे शब्द बोलते है जो निर्दोष, कर्ण प्रिय, मधुर, हृदय-स्पर्शी, सुसंस्कृत, आनंददायक और लोकप्रिय हो । निरर्थक बातों का परित्याग करते है और संध के अनुशासन के विषय पर तथ्यनुसार बोलते है । वह दिन में केवल एक बार भोजन करते है । रात्री को भोजन नहीं करते और न ही दोपहर के बाद भोजन करते है वह नांच, गाने, संगीत खेल, तमाशों व मेलों को नहीं देखते वह कच्चा मांस ग्रहण नहीं करते वह ठगी और धोखाधड़ी के कुटिल तरीके से भी दूर रहते है और वह विकलांग बनाने, हत्या करने, दास बनाने व हिंसा से भी दूर रहते है ।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार गौतम अपने शरीर पर सुगंधित चुर्ण मलना, उससे बाल धोना, स्नान करना पहलवानों की तरह अंगों को गदाओं से थपथपाना, दर्पणों, काजल पुष्पहारों, कुंकुम, सौंदर्य, प्रसाधनों आदि का इस्तेमाल नहीं करते ।

बुद्ध के सिद्धांत

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार गौतम बुद्ध के समय में आर्यों के समाज के लिए नैतिक जीवन का इतना ऊंचा मानदंड बिल्कूल अविदित था की वह पवित्र जीवन व्यतीत करने का उदाहरण प्रस्तुत करके ही नहीं रूके वह समाज के सामान्य पुरूषों और स्त्रियों के चरित्र को भी बनाना चाहते थे । उनके मार्ग दर्शन के लिए उन्होंने दीक्षा का एक ऐसा स्वरूप विकसीत किया जिसके बारे में आर्य समाज बिल्कुल अनिभिज्ञ था दीक्षा में यह व्यवस्था थी कि बौद्ध धर्म को आंगिकर करने वाले व्यक्ति को बुद्ध द्वारा नैतिक सिद्धांतों का पालन करने के लिए वचन देना पड़ता था इस सिद्धांतों को पांच नामों से जाना जाता है : 1. हत्या न करना, 2. चोरी न करना, 3. झूठ न बोलना, 4. कामुक न बनना, और 5. मादक पदार्थों का सेवन न करना । ये पांच सिद्धान्त आम लोगों के लिए थे ।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार गौतम ने भिक्षुकों के लिए अलग से पांच सिद्धान्त बनाए थे : 1. वर्जीत समय पर भोजन न करना, 2. नृत्य-गान में भाग न लेना, 3. फूलमालाओं और इत्रों व आभूषणों से दूर रहना, 4. ऊचे अथवा चौड़ी शौयाओं के उपयोग से दूर रहना, 5. कभी भी धन ग्रहण न करना । इन सिद्धान्तों से एक आचरण संहिता बन गई थी जिनका प्रयोजन स्त्रियों और पुरूषों के विचारों और कार्यों को नियमित करना था ।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध का नाम सामान्यत अहिंसा के सिद्धान्त के साथ जोड़ा जाता है । अहिंसा को ही उनकी शिक्षाओं व उपदेश का समस्त सार माना जता है । उसे ही उनका प्रारम्भ व अतः समझा जाता है । बहुत ही कम व्यक्ति जानते है बुद्ध ने जो उपदेश दिए वे बहुत ही व्यापक है, अहिंसा से बहुत बढ़कर है । इसके बारे में हमें त्रिपिटक के अध्ययन से पता चलता है ।

1. मुक्त समाज के लिए धर्म आवश्यक नहीं है ।
2. धर्म का संबंध जीवन के तथ्यों व वास्तविकताओं से होना चाहिए, ईश्वर या परमात्मा या स्वर्ण या पृथ्वी के संबंध में सिद्धान्तों तथा अनुमान मात्र निराधार कल्पना से नही होना चाहिए।
3. ईश्वर को धर्म का केन्द्र बनाना अनुचित है ।
4. आत्मा की मुक्ति या मोक्ष को धर्म का केन्द्र बनाना अनुचित है।
5. वास्तविक धर्म का वास मनुष्य के हृदय में होता है शास्त्रों में नहीं।
6. मनुष्य का मापदंड उसका गुण होता है जन्म नहीं ।
7. जो चीज महत्वपूर्ण है वह उच्च आदर्श, न कि उच्च कुल में जन्म है ।
8. कोई वस्तु सुनिश्चित तथा अंतिम नहीं होती ।
9. कोई भी वस्तु स्थाई या सनातन नहीं होती प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील होती है।
10. युद्ध यदि सत्य तथा न्याय के लिए न हो, तो वह अनुचित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] डॉ. अम्बेडकर के दस्तावेज, संग्रह : नानक चन्द रत्तू ।

[2] डॉ. अम्बेडकर का पत्र डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन, पूना के नाम, दिनांक: 8 दिसम्बर 1929, धनंजय कीर, डॉ. अम्बेडकर : लॉ एण्ड मिशन में उद्धृत ।

[3] डॉ. अम्बेडकर की महादेव देसाई से बातचीत, हरिजन से लिए अंश, इण्डियन एक्सप्रेस में पुनर्मुद्रित, संग्रह : नानक चन्द रत्तू।

[4] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खण्ड ट।

[5] दलित वर्ग अधिवेशन की कार्यवाही रपट, नागपुर सत्र, 1942 ।

[6] डेडीकेशन, “डॉ. अम्बेडकर, पाकिस्तान एण्ड दि पार्टिशन ऑफ इण्डिया” ।

[7] डॉ. अम्बेडकर : “लाइफ एण्ड मिशन”, धनंजय कीर, दूसरा संस्करण

[8] डॉ. अम्बेडकर एस., “मेम्बर ऑफ दि गवर्नर समर लॉ एक्जीक्यूटिव काउन्सिल”, 1942, भाग 10 ।

[9] डॉ. अम्बेडकर, “दि प्रिन्सिपल आर्किटेक्ट ऑफ दि कान्स्टीट्यूशनल ऑफ इंडिया”, 1994 ।

[10] डॉ. अम्बेडकर, “राइटिस एण्ड स्पीचीस”, भाग 13, बम्बई गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र, 1994 ।

[11] दि बुद्ध एण्ड हिज धम्म, 1992 ।

[12] एबे जे.ए. डुबोईस, “हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरीमनीस”, आक्सॅफोर्ड, क्लेरैंडन प्रेस, 1897 ।

[13] ब्राइस जेम्स, “दि होली रोमन एम्पायर, लंदन”, मैकमिलन, 1913 ।

[14] भारद्वाज ए.एन., “दि प्रॉब्लेम ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट एण्ड शेड्यूल्ड ट्राइब्स इन इंडिया”, नई दिल्ली, ला इट एण्ड लाइफ, 1979 ।